12 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कमल पुष्प समान स्थिति ही ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ आसन अनुभव करना

➢➢ कमल पुष्प समान स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ मैं आत्मा परम पवित्र आत्मा हूं

→ अपने सत्य स्वरुप को निहारती

→ मैं ज्योति बिंदु आत्मा

→ देह की दुनिया से न्यारी

→ अपनी कर्मेन्द्रियों की मालिक

→ स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूं

→ इन्द्रियों के आकर्षण से परे

■ न्यारी और प्यारी हूं

■ विदेही आत्मा हूं

■ परमधाम की रहवासी हूं

→ अपने पवित्र स्वरुप में हूं

■ अपने पवित्र स्वरुप को अनुभव करती

→ परमधाम में बीज रुप बाप के सम्मुख हूं

→ बाबा से आती पवित्रता की किरणों के झरने के नीचे

→ समाती जा रही हूं इन किरणों रुपी बांहों मे

→ हर इन्द्रिय कमल समान बनती जा रही है

→ सारा किचडा जलकर भस्म हो रहा है

■ शीतलता का अनुभव

■ कर्मबंधन से मुक्त

➳ _ ➳ पवित्रता की शक्ति से ही सर्व बंधनों से मुक्त

➳ _ ➳ सर्वशक्तियों से सम्पन्न मैं आत्मा धीरे धीरे साकार लोक मे आती हूं

→ मैं आत्मा बापदादा के साथ कम्बाइंड हूं

→ लौकिक मे रहते अलौकिकता का भाव है

→ सर्व बंधनों से मुक्त आत्मा

→ सर्व सम्बंध निभाते न्यारी और प्यारी

→ कोई वस्तु का आकर्षण नही खींचता

■ कोई लगाव झुकाव नही

■ कोई अटैचमेंट नही

→ सर्व सम्बंध बस एक बाप से

→ बस बाबा आपकी ही हूं

■ जो कहेंगे जैसा करायेगे

■ जैसे चलायेंगे जैसे करायेंगे

→ मेरा तो एक शिव बाबा दूजा न कोई

➢➢ बापदादा की छत्रछाया मे रहने से न्यारी और प्यारी स्थिति

➳ _ ➳ ब्राह्मण जीवन मुझ आत्मा का नया व अलौकिक जन्म है

→ संगमयुग कल्याणकारी युग मे हूं

→ याद मे रह सारे कल्प के लिए कमाई कर रही हूं

→ श्रेष्ठ कर्म रुपी बीज बो रही हूं

→ **हर कर्म करते कर्म के प्रभाव से**

→ न्यारी और प्यारी

→ निमित और निर्मान

■ **एक बल एक भरोसा**

→ एक का ही बल सदैव अनुभव करती हूं

→ दो भुजाओं वालो के सहारे छोड

→ हद के आधार छोड

→ हजार भुजाओं वाले सर्वशक्तिमान की छत्रछाया में

→ सदा निश्चिंत और सेफ हूं

■ **निश्चयबुद्धि विजयन्ति**

→ **एक बाप की श्रेष्ठ मत पर चल**

→ **दिव्य बुद्धि रुपी गिफ्ट को यूज करते**

■ **कमल पुष्प समान स्थिति**

→ **अनुभव करते हर्षित रहती हूं**

→ **यही स्थिति मुझ आत्मा का श्रेष्ठ आसन है**